

नवमः पाठः

कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्

प्रस्तुत पाठ अम्बिकादत्तव्यास द्वारा रचित ‘शिवराजविजय’ नामक ऐतिहासिक उपन्यास के प्रथम विराम के चतुर्थ निःश्वास से संकलित है। इसके रचयिता अम्बिकादत्तव्यास बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। इन्होंने संस्कृत व हिन्दी में शताधिक ग्रन्थों की रचना की। इनकी कृतियों में अभिव्यक्त अद्भुत कल्पनाशक्ति एवं पात्रों के चरित्र में प्रदर्शित उच्च आदर्शों ने विद्वज्जनों को अपनी ओर आकृष्ट किया।

प्रस्तुत पाठ में यह दर्शाया गया है कि जो वीर, विश्वासपात्र, कर्मठ व दृढ़संकल्प वाले होते हैं, उन्हें मानवीय एवं प्राकृतिक किसी भी प्रकार की बाधायें अपने संकल्पित लक्ष्य को प्राप्त करने से नहीं रोक सकतीं, संकल्पित कार्य को पूरा करने में चाहे उनके प्राण भी क्यों न चले जायें।

शिवाजी का विश्वासपात्र एवं कर्मठ दूत (गुप्तचर) अपने निर्दिष्ट कार्यों को पूरा करने के लिए सिंहदुर्ग से पत्र लेकर तोरणदुर्ग जाता है। रास्ते में अनेक प्रकार की भीषण प्राकृतिक बाधाओं के बाद भी वह तनिक भी विचलित नहीं होता है तथा अपने संकल्पित लक्ष्य की ओर बढ़ता ही जाता है। वह कहता है— ‘कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्’— अर्थात्— ‘कार्यं सिद्धं करुँगा या देहं त्याग कर दूँगा’। यही भाव प्रस्तुत गद्यांश में वर्णित है।

मासोऽयमाषाढः, अस्ति च सायं समयः, अस्तं जिगमिषुर्भगवान् भास्करः सिन्दूर-द्रव-स्नातानामिव वरुण-दिग्वलम्बिनामरुण-वारिवाहानामभ्यन्तरं प्रविष्टः। कलविङ्गश्चाटकैर-रूतैः परिपूर्णेषु नीडेषु प्रतिनिवर्तन्ते। वनानि प्रतिक्षणमधिकाधिकां श्यामतां कलयन्ति। अथाकस्मात् परितो मेघमाला पर्वतश्रेणीव प्रादुरभूत्, क्षणं सूक्ष्मविस्तारा, परतः प्रकटित-शिखरि शिखर-विडम्बना, अथ दर्शित-दीर्घ-शुण्डमण्डित-दिग्न्त-दन्तावल-भयानकाकारा ततः पारस्परिक-संश्लेष-विहित-महान्धकारा च समस्तं गगनतलं पर्यच्छदीत्।

अस्मिन् समये एकः षोडशवर्ष-देशीयो गौरो युवा हयेन पर्वतश्रेणीरुपर्युपरि गच्छति स्म। एष सुघटितदृढशरीरः श्याम-श्यामैर्गुच्छ-गुच्छैः कुञ्जित-कुञ्जितैः कच-कलापैः

कमनीय-कपोलपालिः दूरागमनायासवशेन सूक्ष्म-मौकितक-पटलेनेव स्वेदबिन्दु-व्रजेन समाच्छादित-ललाट-कपोल-नासाग्रोत्तरोष्ठः प्रसन्न-वदनाम्भोज- प्रदर्शित-दृढसिद्धान्त- महोत्साहः, राजतसूत्र-शिल्पकृत-बहुल-चाकचक्य-वक्र- हरितोष्णीष-शोभितः, हरितेनैव च कञ्जुकेन-व्यूढगूढचरता-कार्यः, कोऽपि शिववीरस्य विश्वासपात्रं सिंहदुर्गात् तस्यैव पत्रमादाय तोरणदुर्गं प्रयाति।



तावदकस्मादुत्थितो महान् इञ्ज्ञावातः, एकः सायंसमयप्रयुक्तः स्वभाव- वृत्तोऽन्धकारः, स च द्विगुणितो मेघमालाभिः। इञ्ज्ञावातोद्भूतैः रेणुभिः शीर्णपत्रैः कुसुमपरागैः शुष्कपुष्पैश्च पुनरेष द्वैगुण्यं प्राप्तः। इह पर्वत-श्रेणीतः पर्वतश्रेणीः, वनाद् वनानि, शिखराच्छिखराणि प्रपातात् प्रपातान्, अधित्यकातोऽधित्यकाः, उपत्यकात उपत्यकाः, न कोऽपि सरलो मार्गः, नानुद्भेदिनी भूमिः, पन्थाः अपि च नावलोक्यते। क्षणे-क्षणे हयस्य खुराश्चक्कण-पाषाण-खण्डेषु प्रस्खलन्ति। पदे पदे दोधूयमानाः

वृक्षशाखा: समुखमाघन्ति, परं दृढसङ्कल्पोऽयं सादी (अश्वारोही) न स्वकार्याद् विरमति। परितः स-हडहडाशब्दं दोधूयमानानां परस्सहस्र-वृक्षाणां, वाताधात-संजात-पाषाण-पातानां प्रपातानाम्, महास्थतमसेन ग्रस्यमानानामिव सत्त्वानां क्रन्दनस्य च भयानकेन स्वनेन कवलीकृतमिव गगनतलम्। परं “देहं वा पातयेयं कार्यं वा साधयेयम्” इति कृतप्रतिज्ञोऽसौ शिववीरचरो निजकार्यान्न विरमति।

शब्दार्थः टिप्पण्यश्च

| | |
|------------------------------|--|
| जिगमिषुः | - जाने के इच्छुक; गम् + सन् + उ; इच्छार्थक ‘सन्’ प्रत्यय। |
| सिन्दूरद्रवस्नातानाम् | - सिन्दूर के घोल से स्नान किये हुए। |
| स्नातानाम् | - ष्णा (शौचे) + क्त प्रत्यय। षष्ठी विभक्ति बहुवचन। |
| वरुणदिक् | - पश्चिमदिशा; वरुणस्य दिक्; वरुणदेव को पश्चिम दिशा का अधिपति माना जाता है। |
| वरुणदिग्बलम्बिनाम् | - वरुणदिशः अबलम्बनं शीलं येषां ते। तेषाम्। अव + लम्ब् + इन् प्रत्यय। |
| अरुणवारिवाहानाम् | - लालिमायुक्त बादलों के; अरुणाश्च ते वारिवाहाश्च। तेषाम्। वारि वहन्ति इति वारिवाहाः = मेघाः। |
| कलविङ्का: | - पक्षी (गौरैया)। |
| चाटकैरः: | - पक्षिशावकों के द्वारा। चटकस्य अपत्यं चाटकैरः। चटका + एरच् प्रत्यय। गौरैया का बच्चा। |
| प्रतिक्षणम् | - पल-पल। क्षणं क्षणम् = प्रतिक्षणम्। अव्यय। |
| नीडेषु | - घोंसलों में। नपुंसकलिङ्गं, सप्तमी बहुवचन। |
| श्यामताम् | - कालोपन को। श्यामस्य भावः = श्यामता। भावार्थ में ‘तल्’ प्रत्यय। श्याम + तल्। |
| कलयन्ति | - प्राप्त करते हैं। कल (गतै सङ्ख्याने च) + णिच्, लट् लकार प्रथम पुरुष, बहुवचन। चुरादिगण। |
| अथ | - अनन्तरम्। अव्यय। |

**दर्शितदीर्घशुण्डमण्डत
दिगन्तदन्तावलभयानकाकारा**

- लम्बी-लम्बी सूँडों से सुशोभित दिगगजों के समान भयानक आकार वाली (मेघमाला)
- दीर्घश्चासौ शुण्डश्च = दीर्घशुण्डः। दर्शितश्चातो दीर्घशुण्डश्च। दर्शितदीर्घशुण्डः। दर्शितदीर्घशुण्डेन मण्डतः। दिशाम् अन्ताः दिगन्ताः। शोभनौ दन्तौ अस्य इति दन्तावलः। दिगन्ता एव दन्तावलाः दिगन्तदन्तावलाः। दीर्घशुण्डमण्डताश्च ते दिगन्तदन्तावलाश्च। दर्शितदीर्घशुण्डमण्डतदिगन्तदन्तावलाः। भयनाकश्च असौ आकारश्च भयानकाकारः। दर्शितदीर्घशुण्डमण्डतदिगन्त-दन्तावला इव भयानकाकारः यस्या सा (मेघमाला)।
- पर्वत शिखरों का अनुकरण करने वाली (मेघमाला) शिखरिणां शिखराणि शिखरिशिखराणि। शिखरिशिखराणां विडम्बनं = शिखरिशिखरविडम्बनम्। प्रकटिं-शिखरिशिखरविडम्बनं यथा सा (मेघमाला)।
- मेघमाला ने समस्त गगन मण्डल को आच्छादित कर लिया। ‘परितः’ अव्यय के प्रयोग से ‘गगनतलं’ और ‘समस्तं’ पदों में द्वितीया विभक्ति हुई है – ‘अभितः परितःसमयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि’ इस अनुशासन से।
- चारों ओर।
- प्रकट हुई। प्रादुस् + भू + लुड् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन।
- (बादलों के) परस्पर मिल जाने से।
- ढक लिया है। (व्याप्त हो गई)। परि + अच्छदीत्। छद (संवरणे) लुड् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन।
- लगभग सोलह वर्ष का। ‘लगभग’ इस अर्थ में ‘कल्प’ ‘देश्य’ या ‘देशीयर्’ प्रत्यय लगते हैं। यहाँ ‘देशीयर्’ प्रत्यय लगा है। षोडशवर्ष + देशीयर्।
- घुँघराले। कुञ्च् (गति-कौटिल्यालपीभावेषु) + क्त प्रत्यय।
- केश समूहों के द्वारा। कचानां कलापाः तैः।

**मेघमाला समस्तं गगनतलं
परितः पर्यच्छदीत्**

परितः:

प्रादुरभूत्

पारस्परिकसंश्लेषण

पर्यच्छदीत्

षोडशवर्षदेशीयः

कुञ्चितकुञ्चितैः

कचकलापैः

कमनीयकपोलपालि:

- सुन्दर गालों वाला। कमनीये कपोलपाली यस्य सः कम् (कान्तौ) + अनीयर् प्रत्यय।

हयेन

- घोड़े से।

स्वेदबिन्दुव्रजेन

- पसीने की बूँदों से। स्वेदबिन्दूनां व्रजः तेन।

समाच्छादितललाट-

- जिसका ललाट, कपोल, नासिका का अग्रभाग तथा उपरी ओंठ (पसीने की बूँदों से) व्याप्त है। ललाटकपोल-नासाग्रोत्तरोष्ठ (समास में एकवचन होना विशेष है) समाच्छादितं ललाटकपोलनासाग्रोत्तरोष्ठं यस्य सः बहुव्रीहि समास।

प्रसन्नवदनाम्भोजेन

- प्रसन्नमुखकमल से।

प्रसन्नवदनाम्भोजप्रदर्शित-

- प्रसन्नमुखकमल से दृढ़ सिद्धान्त के महोत्साह को। प्रकट करने वाला।

दृढ़सिद्धान्तमहोत्साहः

- चाँदी के तार की कढाई (शिल्प) के कारण अत्यधिक। चमकने वाली तथा टेढ़ी बँधी हुई हरी पगड़ी से सुशोभित। राजतसूत्रस्य शिल्पेन कृतं बहुलं चाकचक्यं यस्य तथाभूतं वक्रं हरितं च यत् उष्णीषं, तेन शोभितः बहुव्रीहि समास।

आदाय

- लेकर। आ + दा + ल्यप् प्रत्यय।

प्रयाति

- जाता है। प्र + या (प्रापणे) + लट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन।

झंझावातोद्धूतैः

- आँधी से उठी। झंझावातेन उद्धूतैः। उत् + धू (कम्पने) क्त प्रत्यय।

रेणुभिः

- धूलों से।

द्विगुण्यम्

- दुगुना हो गया। द्विगुणस्य भावः। द्विगुण + ष्वज्

अनुद्भेदिनी

- समतल। न + उद्भेदिनी। न + उद् + भिद् + इन् + डीप् प्रत्यय।

प्रपातात् प्रपाता

- झरने के बाद झरने।

| | | |
|----------------------------|---|---|
| अधित्यकातोऽधित्यका: | - | अधित्यका (पर्वत के ऊपर की ऊँची भूमि) के बाद अधित्यकायें। |
| उपत्यकात उपत्यका: | - | पर्वत के पास की नीची भूमि। उपत्यका के बाद उपत्यकायें। |
| दोधूयमाना: | - | अत्यधिक हिलने वाले। पुनः पुनः अत्यधिकं कम्पमानाः। धूज् + यड् + शानच् प्रत्यय। |
| आघातः: | - | अभिघात। चोट। आ + हन् + क्त प्रत्यय। |
| महान्धतमसेन | - | अत्यन्त अन्धकार से। अकारान्त नपुंसक शब्द है। अन्ध्याति इति अन्धम्। अन्धं च तत् तमश्च। अन्धतमसम्। महच्च तत् अन्धतमसं च महान्धतमसम्। तेन। |
| कवलीकृतम् | - | ग्रसित होता हुआ। अकवलं कवलं सम्पद्यमानं कृतं कवलीकृतम्। कवल + च्छि + कृतम् प्रत्यय। |
| आघन्ति | - | आ + हन्। लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन। |
| सादी | - | घुड़सवार। |
| चिक्कणपाषाणखण्डेषु | - | चिक्कने पत्थर खण्डों पर। |
| साधयेयम् | - | सिद्ध करूँगा। साध् (संसिद्धौ) + णिच् प्रत्यय + लिङ् लकार। उत्तम पुरुष एकवचन। |
| पातयेयम् | - | नष्ट कर दूँगा। पत् (गतौ) + णिच् प्रत्यय। लिङ् लकार उत्तम पुरुष एकवचन। |

अभ्यासः

1. संस्कृतेन उत्तरं दीयताम्-

- (क) सायं समये भगवान् भास्करः कुत्र जिग्मिषुः भवति?
- (ख) अस्ताचलगमनकाले भास्करस्य वर्णः कीदृशः भवति?
- (ग) नीडेषु के प्रतिनिवर्तने?
- (घ) शिववीरस्य विश्वासपात्रं किं स्थानं प्रयाति स्म?
- (ङ) प्रतिक्षणमधिकाधिकां श्यामतां कानि कलयन्ति?
- (च) शिववीरविश्वासपात्रस्य उष्णीषम् कीदृशमासीत्?
- (छ) मेघमाला कथं शोभते?

2. समीचीनोत्तरसङ्ख्यां कोष्ठके लिखत-

- अ. शिवराजविजयस्य रचयिता कः अस्ति? ()
- (क) बाणभटुः
 - (ख) श्रीहर्षः
 - (ग) अम्बिकादत्तव्यासः
 - (घ) माघः
- आ. कतिवर्षदेशीयो युवा हयेन पर्वतश्रेणीरूपर्युपरि गच्छति स्म। ()
- (क) चतुर्दशवर्षदेशीयः
 - (ख) द्वादशवर्षदेशीयः
 - (ग) पञ्चदशवर्षदेशीयः
 - (घ) षोडशवर्षदेशीयः
- इ. शिववीरस्य विश्वासपात्रं किम् आदाय तोरणदुर्गं प्रयाति? ()
- (क) संवादम् आदाय
 - (ख) पत्रम् आदाय
 - (ग) पुष्पगुच्छम् आदाय
 - (घ) अश्वम् आदाय

3. रिक्तस्थानानि पूरयत।

- (क) अथाकस्मात् परितो मेघमाला प्रादुरभूत्।
- (ख) क्षणे क्षणे खुराश्चिक्कणपाषाणखण्डेषु प्रस्खलन्ति।
- (ग) पदे पदे वृक्षशाखाः सम्मुखमानन्ति।
- (घ) कृतप्रतिज्ञोऽसौ निजकार्यान्नि विरमति।

4. अधोलिखितानां पदानाम् अर्थान् विलिख्य वाक्येषु प्रयुज्जत।

भास्करः, मेघमाला, वनानि, मार्गः, वीरः, गगनतलम्, झञ्जावातः, मासः, सायम्।

5. अधोलिखितानां पदानां सन्धिविच्छेदं कृत्वा सन्धिनिर्देशं कुरुत।

तस्यैव, शिखराच्छिखराणि, कोऽपि, प्रादुरभूत्, अथाकस्मात्, कार्यान्नि।

6. अधोलिखितानां पदानां प्रकृतिप्रत्ययविभागं प्रदर्शयत।
प्रयुक्तः, उत्थितः, उत्प्लुत्य, रूतैः, उपत्यकातः, उत्थितः, ग्रस्यमानः।
7. अलङ्कारनिर्देशं कुरुत।
(1) वदनाभ्योजेन (2) दिगन्तदन्तावलः (3) सिन्दूरद्रवस्नातानामिव वरुणदिग्वलम्बिनाम्
8. विग्रहवाक्यं विलिख्य समासनामानि निर्दिशत।
मेघमाला, महान्धकारः, पर्वतश्रेणीः, महोत्साहः, विश्वासपात्रम्, हरितोष्णीषशोभितः।
9. पाठ्यांशस्य सारं हिन्दीभाषया आड्ग्लभाषया वा लिखत।
10. पाठ्यांशे प्रयुक्तानि अव्ययानि चित्वा लिखत।

योग्यताविस्तारः

शिवाजी इत्यस्य कथामाधारीकृत्य संस्कृते, अन्यासु भारतीय-भाषासु च लिखितानां कथानकानां ग्रन्थानां वा सूचना संग्रहीतव्या। तद्यथा संस्कृते ‘श्रीशिवराज्योदयं’ नाम महाकाव्यम् अस्ति।

द्वादशमासानां नामानि ज्ञेयानि, अस्मिन् पाठे कस्य मासस्य वर्णनं कृतम्, तेन कथाप्रसङ्गे कः विशेषः समुत्पन्न इति निरूपणीयम्।

अस्मिन् पाठे निसर्गस्य (प्रकृतेः) कीदृशं स्वरूपं चित्रितम्, तस्माच्च घटनाचक्रं कथं परिवर्तते इति प्रतिपादनीयम्।

